



॥ ॥ उमचूक वयिया सूचकचूक आलिगल रुचूवचूक वयिया श्वक वावादी
 आलिगल सैवलचूक वयिया ॥ ॥ कृति सैविचूक वयिया श्वक वयिया श्वक वयिया श्वक
 अरुणी मय्या न १ अनुरु सैसवदव वजया उल दवी मित्रंगिवयन संकाव ॥ ॥
 विमुचनगुक्क एक वायग वाता विमुचनगुक्क एक वीयविवा शिनी सुवनः
 नव नागव सैयसात्रिल रुलिया उवका कावा ॥ ॥ अदिनि सैसगुचू वानगु
 नाग्य कादिगल राव अरावा शजलम मवराय वंधन कादिगल रायमावः

॥ नक वयिया ॥ अगिय संकाव ॥ ॥ ० ॥ १ नाग नाट ॥ वक वयिया गिनी लायन सैद विअरा
 नदनी गुजा पुरुव वकि वरुणा ॥ ॥ उक्का दवी वावूनी मामकि दवी शजगय माहा
 दिव मय्या सवाय ॥ ॥ आगम वंदय वानव वान आगव वमदि कागुचू
 यदस्य ॥ ॥ यैव वरु स्ववृयज गुक्क १ सयव आगिनी माय रुचूव गुचूव ॥ ॥
 सगगुचूव सिल्य गतधिया १ गनयिदा कवज सूनाम वयि ॥ ० ॥ १ ॥ १ नाग ना
 वयि ॥ नमरु मका वरु वृयध १ स्वक दि सव उरुधव ॥ ॥ गता ह १ गता गता ह

॥ प्रियंका ॥

हैं हैं ॥ वंदा आलिंगन आगध वृक्ष जघन मृदाध वृ॥ ॥ धवन सुसंघ, दहध वृ
२ सनद सुसादिय चन्द्रम वृ॥ ॥ मोया आदरुलिन जंगु २ सादिय चक्र वृक्ष सत्यम ह
॥ ५१ ॥ ७३ ॥ १ नागधुंग वसि ॥ विवक वव विरुणि मधुल मा अ, धिति आनन्द मू
वृनिध वा २ वक्र वा वाही आ आलिंगन संवन नाना वसि मरु जा वा ॥ ॥ गना हैं हैं
हैं २ गना हैं हैं ॥ ॥ नीव वरु चक्र वक्रु य निमुख विनगा, वन मा आनन्द मू वनिध वा
२ विष्णु वक्र, अर्ध चक्र जग मकट धार, हाहु आग वरु सा शिगा ॥ ॥ वक्र चक्र गः

॥ जगद आग व ॥

अवम, उम वृख धांग, विवमानन्द मू वनिध वा २ क वतिक या व, य व मू मा ल, विष्णु व वः
मृनिध वा, वा घु य म क र्ति या र्ति गा ॥ ॥ दिगो विदिग का का अदि, ज म दा कि ती द
वी, सह जानन्द मू वनिध वा २ नना मि २ श्री चक्र संवा वा, सग सु वृ च व ल, आ वा धि गा ॥ ५ ॥
॥ ५१ ॥ १ नाग रु हि ॥ हाहु आग व र ल, किया यि व संवल, ध व यि क वा लि, व व सा २ रु
म वा दं ग मं डि व मू सा न, म क ट क ल दि गं व वा ॥ ॥ व व व, मा वू व, सं व व वा या, स म
ल मू द लि मा वू का वा २ रु म वि वा दि व, व व वा वा ही, रु द म दि सा वा ॥ ॥ सा लि गा

॥ प्रह्लाद ॥

यत्नवर्गं गुरुमयत्नं कथं स्वयं गीतं वृत्तं गगननिवावर्तु वंदितं आज्ञा मयं मंजुल
रत्नलिता ॥ ॥ प्रियं धवला गवः सुदिग्गवर्गं वयं ययि सयि मृत्परादा २ रुमविना
हिनः वज्रवावाही उक्तं विनूदममि अन्धवा ॥ ॥ गवन्कि विलावर्तु वज्रजालि
यावृत्तं मगगुत्तं मगगवः आवाध २ समया आनंदं रुलिगलमधुलं सवत्रवज्रवावा
ही ॥ ३ ॥ ध्रु ॥ ० ॥ १२ ॥ गवः ॥ विदितं वा ययि आगिनी दहकवात्री शकमत
कूलिसदूयि कवः न वयाव ॥ ॥ आगिनी उक्तं विनूदममि अन्धवा ॥ ॥ वज्रवावाही आति

॥ वज्रवावाही ॥

नामरु वृद्धियावः कमवर्गं ययि वयि ॥ ॥ कथं आगिनी लयतजायि २ मतिकूलः
वहियावः उाठियातसमानं ॥ ॥ सासुगवावः घानि कावावः श्वदुसूयि ययि क
नरावाडा ॥ ॥ गनयिगलजाविहमः कुंदूविवः शतवयनाठिमा ३ उरायसवत्र
वा ॥ ३ ॥ ध्रु ॥ ० ॥ १२ ॥ गवः ॥ विदितं वा ययि आगिनी दहकवात्री शकमत
कूलिसदूयि कवः न वयाव ॥ ॥ आगिनी उक्तं विनूदममि अन्धवा ॥ ॥ वज्रवावाही आति

॥वक्रिर्क०॥

महाकं० १४२ कृतिर्द्विविधश्च स मलमंगली ॥ ॥ ग्वकूदरुन विमलमंगली ॥
सुशक्तकं० १ कवुल्लवुल्लवायन लायनविशक्तं ॥ ॥ द्वादशजुजधावि चाविः
चवुवदतं० नीलमं० द्वाव गयनयुशनीना ॥ ॥ ४२ ॥ १२ वागवपुत्री ॥ चक्रिर्क
उलकथिलाचक म० वनरुषिग गीवपुल्लु नवलिलमावा १ सवचक्रिचक्रि लेयागः
स्मादिरुषिग गगलमावि वंधुविनाया ॥ ॥ ४३ ॥ सुसिद्धवुवद भावुकावा इत्य
नाथगीर्सेववनाया ॥ ॥ वक्रक वाटक लायधविना कथयिष्या उखद्वो० ग२ सं

॥उदिगा०॥

रुगजागिनी कमलविहारींगल महासुखमविषसाध ॥ ॥ वक्रवावासा आलिग
नसेवव नाययिषदू विरुगगश्वाकलिकाल प्रयाकिदकिरुवुव अर्द्धयुवकलन
सीलाव ॥ ॥ ४४ ॥ १२ वागविशास ॥ उदि
गल कीदकिरुवुव विनासयिषून्यकवुल्ल ॥ ॥ ४५ ॥ १२ वागविशास ॥ उदि
नागललेया यवनदूनाश्च वसूदामक कावसवना ॥ ॥ द्वादशवरायनिर्से
गविगा १ अखयति वंजतमाककगा ॥ ॥ ४६ ॥ १२ वागविशास ॥ उदि

॥ जयवाकलि ॥

वसु मध्वक्षणा ॥ ॥ दग्धालिंशवप्रतिनिर्गता ॥ १ दग्धासुतनसित्यनमिगा ॥ ॥
नमद्विगियवन ययिगुप्रगता ॥ १ वज्रवावाही रुक्मिणीनमिगा ॥ ॥ ७ ॥ ॥ स्वाम
मध्वमग ॥ ॥ जयवाकलि रुक्मवचलन ॥ १ मयलसुनासुव उगता उद्धाव ॥ ॥ गुरग
वगियादक मतमयमधुल नोयुप्रवृत्तनकावा ॥ १ रुक्ममहाल आ रावणविशुधित
मखल धीवृडलाला गिनि ॥ १ गिनिगितनयना ॥ ॥ कलनिकयालः
धीवृत्तनवगिप्रमाला ॥ १ रुक्मखदीगवव मकूटकाणा ॥ ॥ गिनिमसिधुव कऊ

॥ गजजिन ॥

लकुला ॥ १ कमुत्रिकयूव र्गवालमखसाद ॥ ॥ गतयिगूलगवक वाकलिदासा ॥
धीवज्रदवायसाद रुक्मवयाया ॥ ॥ ७ ॥ ॥ १ वागरीत्रवि ॥ गजजिन उद्धाव
विगा कमलकुविग अर्द्धवालि ॥ १ उमप्रकवनि कथावगिगुला वामखदीगकयाल
धवाया ॥ ॥ धीसंवववाया वाकलि रुक्मजंगुविग ॥ १ मावयिप्रवाययियावमाया
सासुग अरुमदविना ॥ ॥ यागवृक्षमूदवाममहा ॥ १ धावया वनवसिप्रमावा
१ नीलरुलीग बाहिरकधुका ॥ १ वण वदमुख अगिदिकवावधना ॥ ॥ अलिर

पथो गेव वचाययियाथ कालिनाय विवमूडा २ विन्धकूलिम् अर्धचंद्रजयाश्न व्याः
 पुचर्मखठमूडा ॥ ॥ सुनिर्मवित्रविन्धप्रवागीनिचक्रमहावित्रवित्रा २ कपूलाः
 गुंगमववित्रवित्रव्यव रंजयिम यवरीमावर्द्धना ॥ धा ॥ ७ ॥ २ नागरीवि ॥ नमा
 मि २ जिनकाकु कवीदकवकुल मूत्रनिगालिनिगा २ यथरहानयं चकाकुसुत्रयावृद्धव
 वमआवयधवा ॥ ॥ गंताहं गंताहं जगगरीमावडधविद्यामनाहव नमसुशय
 चजिनन्धवा २ यंचहानयंकाकुसुत्रयावृद्धधर्म आवयधवा ॥ ॥ नमामि २ श्रीमान्ति

पुनश्च अक्षि सिद्धि वन्दयिने २ दुविता हनन सर्व पाप स्वयं कन दान युक्त वन्दनाः
 कथ्यता ॥ ॥ नमामि १ धर्म धातु वागीश्वर धातु दूवात्र यत्रिमहिता २ धातु वगा
 वन पुना पुनका वास वन्दयत्रिमहिता ॥ ॥ नमामि २ वागीश्वर मधुल यद्महिः
 नीनिवासिना २ सत्व विमहिता दुःख विनाशन पुनमामिजिन यक्षयना ॥ ६ ॥ ० ॥
 वागशास ॥ विदलक मल वन कसम स यवंग मधुक वरु वरीक्षा २ श्री विपूषाक
 वरुग मुखदयी भदनयालय व्यापिता ॥ ॥ नमामि नैवात्मा विरुवनमागावक

॥ इदं नमः ॥

वादवी श्रीमृगसुल २ सयलसूत्रासूत्र वन्दितावत्र (६) अन्नगसाक्षिसिद्धि वः
 नृपसादा ॥ ॥ नंदनवमिव चंदनगन्ध अन्नगकुसुमयातिजागवन्न २ः
 निलीगंगासम वागमनिनील अन्नगनिधेयकृष्णन ॥ ॥ अक्षरोवत्र अक्ष
 यागिनीदवी अन्नगदवासूत्रक गपाल २ अक्षमहाशय दूलिगनिलनिलवान्
 व अन्नगविघ्ननिलवान् ॥ ॥ विश्वविद्यायित गात्रनिदवी अक्षयनि
 वंजन यागिमथ २ अतिमंथ सुखरुलदायनीदवी जलमजलमभा वृक्ष

॥ वासव ॥

॥ वासव ॥

यायनवः ॥ ७ ॥ ॥ १ वागवृक्ष ॥ वासवयवधल दहिनकवगिशमा
 यवन्नउत्रमंडमालवृषिग ॥ ॥ नात्रयि चक जगिय वद्रजागिनी २ गिनि
 नयदवी प्रियुवनयमिसा ॥ ॥ कालमृत्पदयि यागवर्धयि २ वागद्वयः
 भारु कलमिनकुदिता ॥ ॥ धूलशूकमानि वंजनदवी २ गून्यायागदवी शू
 न्यलुगाव ॥ ॥ शृष्टिसंज्ञावृणी कवृक्षकदवी २ मात्कमार्गशुक्लमविज जन
 ती ॥ ७ ॥ ॥ १ वागमाली ॥ वजिधालिवावगावि वंदावि २ सिधि

नीद्यांघिनि जंवूक उवाकिनी॥ ॥ नमामिष्ठीजागांवंग्यनम्ववाश्विः
 निनि नगदवा शिशुवनयप्रिभ॥ ॥ पूर्वडरुवयकिमदस्विन दिगद
 वीशकाकिनिदिघिनी चवसिकेवाजिभ॥ ॥ चतुवदिगरु मरुलनंगुद
 वीश्विनिनि नगदवा नाचयिवाभ॥ ॥ हविहववका ॐ नमः सुवग

॥ पृथगाना ॥

वशघाउगआगिनी समवसंसाव॥ धर ॥ ७ ॥ एवागनादि ॥ यं च व
 ना धाविनमालि यंचल्लानयच मूद्राशवलाशनवनिवमाला आवसासा

घवर्मकरि सुधिगवमना॥ ॥ ॐ ॐ ॐ कावसेजावदना स्ववलेवादलनी
 लसमदराश्काधायिसणी महाकालाशयवामृगवस दयेश्वयवयिया शीय
 नवक्रकयावधवा॥ ॥ वक्रवयुवा गिलिनयना घावशयंकल शीयमवद
 नाशडईयजालिगा यिंगवकसा डनमल्लरसा कवूणमय॥ ॥ कवगिक
 पावा धाविनमद्वीग नागवल्लयनाग कुलुल्लवाशनागसिधसिधन लीयुवः
 नाग अल्लनाग अल्लवगससासा॥ ॥ जिनवमाली धालिनमगा वृद्धसासन

॥ एकवदन ॥

सा नन्दकविनाशयगावृक्षा गान्धवरावा सा शुभकलिसा अनुरक्तमनसा ॥
॥ धर ॥ १ ॥ रागमलाद ॥ एकवदनवत्तमकूट आलङ्काराश्चतुष्टयप्रय
रुकरुकरावधनूकालि ॥ नमामिर्मेशीयमनुर्येष्वनस्य आसाम
विपुनयुडधविद्या ॥ दहिनशीगलयनि वामशीमलाकांशमगलमलुम
लमायु प्रकलिनधिगा ॥ शृष्टिर्ललावाया विध्वविद्यायिताश्चरुगय
वद्व्याधि दूत्रिगारुवला ॥ वदधययसादिन दाहरनयियाश्चुपुववला

॥ रागमलाद ॥

सा नृसिद्धिवयसादागा ॥ धर ॥ ३ ॥ रागवलादि ॥ लगलगराथभावामलु
लवा काटिराथगावदराश्चकाटिराथगावा यागिनीहृदयाव वाकचिगकवः
रावा ॥ हृदकटमलुलला रुलिनाय आगिनीहृदयावश्चदधमव्ययीकाष्ट
आलिगल वाकसकलसमायु ॥ पूर्वचक्रचिद्विद्याव दक्षिणवत्तकलियाव
श्याम्भिमयद्रुकासप उरुवस्वप्रधविद्याव ॥ संपुनयागरना आ निमिय
वस्वकगलिश्कायवाकचिर्लमलुलला रुलियाव गगलकुरु ॥ वृषसव

॥ महाकाव्य ॥

१ जगद्विवादिग वप्ररुलदायकं ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ श्यामधनाधि ॥ सवाकांगाम
हासस्वकविद्या चउ आनंदकलायि १ प्रिभुवनरुलसि महासुखयाया जाजाचय
सूर्यदृशिभक्ति ॥ ॥ नयायविना प्रिभुवन एकसवृथी १ सर्वविकल्पविधंनः
दवी अनुरूपरुलदायनि ॥ ॥ अमिनागमधुल उदयावधिति कल्या
नवमिववृथिनि १ कत्रगिकयाल स्वष्टांगकावि यल्लालनवप्रदायनि ॥ ॥ दिगं
वमा मकूटकंगा वकि कुंठलकादिधुधलि १ वाचकमखन यायनक्षत्र गीवमधुल

॥ महाकाव्य ॥

मप्रसिन्नमाला ॥ ॥ सर्वगधगगजननिदवी विवादिगगाव अगावा १ शीवः
जआमिनी निवगगधविद्या गवक्ति समप्रसवजा ॥ ६४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ श्यामधना
धि ॥ कालायिवधियावाला मूर्धनिवककाला १ घनकयाथिहामिवजया क
वृत्तिकियावूनलाला ॥ ॥ मलयजकुंदवृवजयि दिधिमातायिन वजयि ॥
॥ गरिंश्वर्याजनग १ मयनायिवनयायि १ लाचकालजनयुहाया इंदुवृवज
नयायि ॥ ॥ यद्वसमकमुलिसिक्ता कपूलावनयायि १ मयजकुंदनसा

॥ विष्णुयज्ञाय नमः ॥

न गहिरा नृखाजन यायि ॥ ॥ धृषणकृष्णकर्मग साधसाधनमूनयि २नाः
लीसदभ्रंगचन्द्राव गहिरा नृखाजन यायि ॥ ७ ॥ ॥ ध ॥ ॥ एवागलविग ॥ विषय
विषयविनून यवनसी आग आलयिचंद्राविनि नाशिकमल २दहिनजिनवि
वूमसि ॥ उत्रयिसूनगजिम शिखिआरासमय स्यामसययं ॥ ॥ नममंशुधाषः
कालवक्रय रुद्रकर्मवत्रविष्णुमं २ययिधदूमसीआग संगवमवनिष्ठा सुरु
जआनंदमय ग्यानवृषं ॥ ॥ वक्रययकेसग कंकुमवृषानन नामसंगीति

॥ अन्नपंचम ॥

अन्नाख्यानं २जगत्तद्वस्वनासन वाधिरुलदायकं आगगमदृष्टावहिर्य
॥ ॥ गुप्तावदृष्टाविया अक्षयवनकुंचिय मनिमकुटवन्दु उगातिधविषा
२ववृचक्रपादत लीनयत्रमभ्रय सूर्यरुममाव वावदुरुवनं ॥ ॥ स्वप्ना
यामदृष्टावियावन वृद्धधर्मसंघ सत्रनागमिषा २गुप्तावदृष्टाविया
गावकिमृवगवज जलजलमाववृद्धमवनं ॥ ५३ ॥ ७ ॥ ॥ एवागललिग ॥
अन्नपंचम ग्रीमंशकुमाला २गसधवकिवहासंकासनदला ॥ ॥ दवधिमं

॥ पुष्पवन्धन ॥

शुभाष्टशुभवादिना २ पिषुषर्गवदहिनकवधवि ॥ ॥ वामधुलकधवसुव
गुनुनाया २ यद्यप्यगासनंकोननदहा ॥ ॥ दहिनवामकवधनूधवधवि २
वहुवमानदयेवामधुषणादा ॥ ॥ जगन्नाथयाधनाथयमादिगदया २ ज
शि सीयसुखरुलवपणादा ॥ ५३ ॥ ७ ॥ ॥ रागरीवती ॥ धूर्ध्ववक्त्रायनरुस
मात्रशकमकवर्धुशुक्रसुगधवि २ ॥ लनमाहस्वविष्टववाहानचतुध
चतुधववपिगूलमयुवधन ॥ ॥ हं हं अरुणमध्वाननिववाहस

दिना अरुणरीववगलयनिमदिना २ अरुमदि शूमवगमानुयदागास
मवन्नययायगयहवना ॥ ॥ यन्निमळुदायनी रुक्मिवाहानकंकम
वर्धुविजयिरुक्ता २ दन्दिनवावाहि घनघावपुयि अंकुगमदिना कदि
वावृणा ॥ ॥ ॥ नचंदिकादवी अमवर्धु कलिदधुवगाउ दमवृम
दिना २ अरुनादिशका मात्री मयूलवाहान वक्रवाक्तावर्धु लक्ष्मी ॥ ॥
नमृयवेषुविदवी गवृउवाहान उदचक्रमदिना मयूलधवि २ वायुववाः

॥ अथ निविद्याया

द ॥ अथ निविद्याया वामजात सर्वस्वम किलनामात्रसंग्रामाश्वासकवधवग
जनिद्यासा पितृवमताया अचलविला ॥ ॥ नमामि श्री चतुमहालाखला
जागमृष्टकुदिताश्विन्वनाथविन्ववायिग विलविकमहाकाधनाया नमामि श्री
चतुमहालाखला ॥ ॥ माधवसाया यन्मद्ववक्ता वृद्धिमायायादरावला
श्ममलममायालागविमारा ज्ञा य समोवि गऊ निमला ॥ ॥ अथ निविद्याया
मा उग्रयवला दृष्टकला ल क कलनयना शिपिदिता अथवा दूष्टकिनला वलि

॥ श्रीमद्गनाथ ॥

संग्रामा लाखदूगवना ॥ ॥ वलारावला यदालिगमोवि कयवमयूय दूमा
दूनकायाश्ममलममाया वृद्धिमायायादरावला लायगुधमगम अचलविला ॥ ॥ ७ ॥
१ नागकलुदि ॥ श्रीमद्गनाथचलमहा चितविज योश्चन्द्रहासस्वमना
गवा मयकुद ॥ ॥ नमामि नमामि श्री विमंशुकमालाश्मगदिस्वम
जगगगुगुगुवनयायिगा ॥ ॥ यूसुकधमंशुययमगुगुनायाश्
धीधमंशुयस्कानयालमगुलनंछना ॥ ॥ जगगनाथजगगनीवज

॥ पवित्रं ॥

नमो या २ सर्वेषां कवितालयेदिता निर्वृजना ॥ ॐ ॥ ३ ॥ ॥ १ ॥ वागरे
नवि ॥ अविसे सुगगवन महामा कपूवल दं यिनू रुव वाधियदं २
जना मल्ल गय वधन माचय यत्र मा मुग मय यत्र म गुवू ॥ ॥ ॥ ॥
वर्द्ध मरु यातन थारु म दस यि विला मुग या न वक्त २ दं यि न्द रु म र्ग म
वत्र गु के गथ गालू रु व वाधियदं ॥ ॥ सर्वगथा गरायू जनया वं घाट
यामु मया यन नृ पश या न्दि विन विवस्तिर कमल कुलिग स विरावल ॥

॥ तिलनायन ॥

कूम उद कमल कूटा सनिक मला जीन कूल समया आवा र्य यदं २ मंग्रा जन
वत्र द पेल सत्र क य दं वत्र मणि य विरा मलं ॥ ॥ नमामि २ श्री वक्त
सं वना गु व वाक् दध धिया २ सग गु व वल कम व प्रसाद अनू र्क व सिद्धि प
दं ॥ ॥ * ॥ १ ॥ वाग गन्ध शिव वि ॥ श्री लि था यन द्यु वक्त विरा ना
२ क व दू य नि कू म वु ल क्ष म ॥ ॥ ॥ क्ष म क ल यि या हू हू न हि व उ मा रा
२ वाग धि म मा ह व सि व कू दि न ॥ ॥ वाम द हि न क व स व वि या ना २

॥ जिनवलजगनि ॥

कलयिवजानव, आरुगिकलिया ॥ ॥ यल्लाघुडयायिववजीरवविग
तिवापीव, आचार्यकविश्या ॥ ॥ कर्णुवावंग, अखनवहामर वायुसंहाव
धिवदियसंथांग ॥ ध ॥ ॥ २ वागवसंग ॥ जिनवलजगनि, युगाम्ब
वत्रमहिश्चिल्लासयिसमवसंदंदाविंगल ॥ ॥ नीलंसूरुसुत्रय, शृंगमा
संपूर्ण ॥ मालिगल, आनन्दनयन ॥ ॥ वायसंशांग, गयलधा
यमयन ॥ वागविनागदूयिमायानिषर्ण ॥ ॥ अत्रजकुलिगसंजा

॥ गजमुख ॥

गविशुषल ॥ सुत्रवत्रयमुखदंदालिंगल ॥ ॥ दहदिहनुवन, ग्रीजा
मंवेव ॥ पुलामाभिल्लानध्वनी, आलिंगल ॥ ध ॥ ॥ वागधनाष्टी ॥
गजमुखग्रीवयनि, गौदवपदव, नृणाधियगिगरलध्वना ॥ मनिमुकुन, व
लागवरल, गत्रनकित्रलसंकासा ॥ ॥ मालियाविघ्न, मालियादय, मा
लियादूषविनासतं ॥ मालियामाल, मालसंगल, भूयददूखनागिगा ॥
॥ ॥ पर्णवातकुलवज्रखम, रिंगयालदहिनकला ॥ मूगवधन, खद्वी

गङ्गाविस्वयल कनयुवाम् ॥ ॥ विविधवक्रकवृत्त कलिव जगद्ग
मलिमलिगा २ वंदादधुग वंदादल सा रा या यत्र विमिदि मी वा जि ता ॥

॥ वलादलधुग वलाजालिग मुखिक मुख अगि सैद ला २ दिमादलाग
महषदा गा नममनम गङ्गाधियनि ॥ ६ ॥ ॥ वागधनाथी ॥ अ
सिधुद वंदादल ददगामनि धुगकलकवगिक यात्रध ना २ अष्टमीषल अष्टनाग
गवरा ॥ उद्धयिगवक गदगर्न ॥ ॥ काधजमालिया २ गांदवप्रद अशिला

॥ अमिधुग

वर्णदला वक्रवर्णमाहाकला ॥ ॥ वलागवरा विर विगदला घघवना
दमनाहवथा २ ककयागिनीवत्र नीवासिगगलयनि विविधधाम निधिपूः
त्रिगा ॥ ७ ॥ ॥ जल २ मोदुगलयनि गवरा अशिमगमुखरुलदायका २
सगगुत्रववरा सिलंगगधत्रिया गवकि सरुजा नन्द गीगा ॥ ८ ॥ ॥
वागगादि ॥ अष्टवलाविं सग यमदलमाय हं वीजम धाद्वधमाधदला २
नीलरुविग वक्रवर्णदला सफादगमिल एकयंवा सनया ॥ ॥ नमानिअ

॥ अष्टवलादि ॥

लिङादि महासंवना शब्दवाला हि सत्य गा कवूषा मधरा ॥ ॥ शीषमड्ड
 मूष, रंगसंनिता श्विष्ववजा ह्रस्वगण कद्विगुजा ॥ ॥ यथमनुजवज
 ह्रस्वकनामा, षट्तिंसावदाकिनी, वज्रदाकालि श्विगिय अकाशवायुमदनारु
 किंनरियागिनी श्रवाकाका ॥ ॥ हनी यड्डन अग्निबाल, ज्ञानदवी शनीह
 दकहलकलादिधृता ॥ ॥ चतुत्रस चतुर्थेय, कायवाकचिर्क श्रुष्टंशीला
 धृग, चतुर्गगनाथ ॥ ॥ चतुत्रस, चतुर्वन सहस्रवाधिसत्वष्टग, द्वात्रिषाद

॥ प्रमदिग ॥

ग द्वाष्टिंशग, गमगता श्वाकालमलुल यदकिना, गुव्यादगिल्यांधृग उँका
 लवजा ॥ ॥ धर ॥ ॥ वागमधूमक ॥ प्रमदिगदिदग रुमिगुगुवि
 समभत्रुमलुल संक्लिग वयुन श्वादग युजचववदनससागा, वज्रवावाहिक
 रगु अलिंगीगा ॥ ॥ ह्रस्वदहदिहलन मावसयवसमवाधियात्र श्वादा
 लिंगग अहयसैराव, नाययिदान्ती संवनाया ॥ ॥ कुलिगघगुगज
 चर्म विगुल, कर्किमत्रुगुरासाशिगा श्मर्जयुविगकयाल खद्वांग, पागयल

॥ इति निरुपन ॥
॥ इति निरुपन ॥

॥ वक्रनिर्गंधना ॥ ॥ यैवजिनवचमकूटश्रृंगकुगा षष्पुद्राश्रुगवण
विमुषिगा २ अलिकालिद्रुयि श्रुलीटयाययि व्याघ्रवर्मनिवोसिगे रुषु
गनू ॥ ॥ ध्रु ॥ ॥ नागलगा ॥ ॥ द्विविनिस्तनवच विनामयि
कयि ॥ १३० रुनादा मंदलवाया ॥ ॥ रुजकामवजगग निवासि
यात्र १३५ रुनादा मंदलवाया ॥ ॥ अमिय अमिय निर्लजनदर १ २
सदजसंदवि या जिनहू वययि ॥ ॥ उचवूजानिनी एलमना २

॥ इति निरुपन ॥
॥ इति निरुपन ॥

वधावावाहि अलिंगनकाल ॥ ॥ ३० रुनादा कवूवकवालि २ ज
यंडयं अलिंगननालावर्गुवारु ॥ ॥ ०६०३ ॥ ॥ ३ नम
१ नाग ॥ वरुललिग ॥ ३ नमस्तननं गालि क तनूसा १ ०० उनिल दू
मिथिभलकसा ॥ ॥ रुगगन कं रुक्या पुनदवि २ दूखे माल वि
नासनिदवि ॥ ॥ लकनयन विनि नीदमाला २ खर्म कलतिक या
जनिनात्य ॥ ॥ व्याघ्रयनमकुं ये यथा निरा २ खर्वन न्यादन ॥ १